स्तुति के बजाए स्तुतिवान बनें

- ब्र.कु.निधि,सर्वोदय नगर कानपुर।

नवरात्रि अर्थात् नई रात्रि, जिसमें हम सभी चाहें तो अपने भीतर की अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर अपने में नव-जीवन, नव-ज्योति जगाकर चमत्कारिक परिवर्तन ला सकते हैं। कालरात्रि नामक नाम से सुशोभित देवी दुर्गा जैसे हम अपने काल पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और उसका उचित समय आ चुका है। तो हम क्यों न इस समय का सही सदुपयोग करें? नौ दिन का सीधा सा अर्थ है कि बहुत थोड़ा समय है अपने काल पर विजय प्राप्त करने के लिए। इस थोड़े समय में हम अष्ट शक्तियों को जमा करें और अपने आप को अष्ट-भुजाधारी दुर्गा के रूप में स्थापित कर सबके सामने एक आदर्श प्रस्तुत करें।

असीमित काल से हम शक्तियों का पूजन स्तुति एवं वंदन, सुख-संपदा, धन-धान्य इत्यादि की प्राप्ति हेतु करते आ रहे हैं। पौराणिक कथानुसार शारदीय नवरात्रों में (जो आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है) महाराक्षस रावण का वध करने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने शक्ति उपासना एवं व्रत किया था, तब जाकर उन्हें विजय श्री प्राप्त हुई। भक्तों में एक अन्य प्रचलित मान्यता है कि नौ दिनों तक माता दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना करने वालों पर नवग्रहों का प्रकोप नहीं होता व जीवन में उन्हें सुख-शान्ति, यश और समृद्धि भरपूर मिलती है। पुराण की एक अन्य कहानी के अनुसार श्रीराम के गुरु ब्रह्मा ने राम-रावण युद्ध के दौरान दुर्गा देवी को नींद से जगाया। तब देवी ने कहा कि जो भक्त नवरात्रि के नौ दिन श्रद्धा भाव से पूजन करेगा तथा उत्सव के रूप में मनाएगा, वो सभी बंधनों से मुक्त हो सुख-समृद्धि पाएगा।

देवी की नौ रूपों में पूजा

नवरात्रि के नौ दिन देवी को नौ विभिन्न रूपों में पूजा जाता है। इनमें उनके गुणवाचक व रूपवाचक नाम प्रमुख हैं। जैसे शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री आदि। उन नौ-दिनों में देवी के दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी एवं काली रूप की भक्तों द्वारा पूजा की जाती है जिससे मनुष्यात्माओं को बुरी ताकतों और नकारात्मक चिंतन से मुक्ति मिले तथा जीवन में सुख-शांति आये। इसलिए अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करने हेतु परमात्मा साधारण बूढ़े तन ''ब्रह्मा'' में आकर/बैठकर कुंवारी कन्याओं (माताओं) को ज्ञान सुनाते हैं तथा ज्ञान कलश उनके ऊपर रखते हैं। इन्हीं कन्या रूपी देवियों ने शिव परमपिता से ज्ञान अमृत पाकर अज्ञानता रूपी अंधेरे में डूबी हुई मनुष्य आत्माओं को जगाया व ईश्वरीय ज्ञान का सत्य परिचय दिया। इन्हीं देवियों/ब्रह्मापुत्रियों के सत्कर्मों के यादगार में नवरात्रि और आखिरी दिन विजय दशमी मनाई जाने लगी। यही वह चेतन-शक्तियाँ हैं जिनके ऊपर स्वयं शिव परमात्मा ने ज्ञान कलश रखा है जिससे अज्ञान अंधकार की रात्रि का अंत हो और ज्ञान सूर्य के प्रकाश से सभी आत्माओं को नव जीवन मिले।

रात्रि में पूजन का क्यों महत्व है?

नवरात्रि में शक्ति आराधना रात में भी की जाती है क्योंकि रात के समय शांति का वातावरण होता है जिससे कोई भी बाधा उत्पन्न नहीं होती तथा ध्यान अच्छा लगता है, जिससे मानसिक एवं यौगिक शक्तियों की प्राप्तियाँ सहज हो जाती है। सिद्धियों द्वारा मनोकामनाओं की प्राप्ति हेतु भी भक्त रात्रि में देवियों की स्तुति करते हैं।

नवरात्रि वर्ष में दो बार क्यों मनाते हैं?

हर वर्ष नवरात्रि पर्व दो बार धूमधाम से मनाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु के शुरुआत में चैत्र प्रतिपदा से राम नवमी तक और दूसरा शीतकाल के आरंभ में अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से विजयदशमी के एक दिन पहले तक। यह दोनों समय नवरात्रि मनाने के लिए इसलिए चुने गए क्योंकि:

1. ऐसी मान्यता है कि शिव शक्तियाँ ही प्रकृति को चलाने एवं संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं इसलिए शक्ति का आभार प्रकट करने हेतु उत्सव मनाया जाता है।

2. प्रकृति में इस समय जो परिवर्तन होते हैं, उनका सीधा प्रभाव हम मनुष्यों के शरीर और मन पर होता है। ऐसे में हम देवियों से शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं जिससे हमारा शारीरिक व मानसिक संतुलन बना रहे।

उपरोक्त नवरात्रि मनाने के संदर्भ को अपने जीवन के साथ जोड़ने के लिए हम अंदर के विकारों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, नफरत, ईर्ष्या, द्वेष, जलन की भावना इत्यादि रूपी रावण का विनाश कर सतोप्रधन बनें और इन तामसिक वृत्तियों को अपने अंदर से सम्पूर्ण रूप से हटाएं।

देवियों को अष्ट भुजाधारी क्यों दिखाते हैं?

ये अष्टभुजाएँ ''अष्ट शक्तियों'' का प्रतीक हैं जो शिव परमपिता द्वारा विश्व का कल्याण करने हेतु शिव शक्तियों/देवियों को दी गईं। इन्हीं ब्रह्मापुत्रियों/शक्तियों ने विकारों/बुराइयों रूपी रावण से युद्ध किया और सभी को परतंत्रता से मुक्त किया जिस कारण विजय दशमी मनाई जाती है। हर वर्ष हम रावण का पुतला जलाते आ रहे हैं परंतु अपने अंदर बैठे विकारों रूपी रावण को जब तक भस्म नहीं करेंगे तब तक सच्ची विजय दशमी नहीं होगी:- यह मानना है हम सभी का। ''अष्ट शक्तियों जैसे 'सहने की शक्ति', 'समाने की शक्ति', 'समेटने की शक्ति', 'सहयोग की शक्ति', परखने की शक्ति', 'निर्णय करने की शक्ति', आदि सभी शक्तियों को शिव परमेश्वर से लिंक जोड़कर/याद में रहकर आत्मा में समाहित करें, तभी जीवन में सच्चे अर्थ में 'दशहरा' और 'दीपावली' मनेगी। इसमें जो नौ दिनों तक लगातार दीप-ज्योत प्रज्वलित रहती है यह सूक्ष्म रूप से जलने वाली ज्योति है जिसका तात्पर्य स्थूल रूप से न होकर हमारे अंदर ज्ञान ज्योत जलाना है जिससे मन का अंधकार दूर हो और आत्मा शुद्ध व पवित्र बने।

कटक। ओडिशा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अमिताव राय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुलोचना।

नई दिल्ली। लालकृष्ण अडवानी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.आशा।

धुरी-पंजाब। एस.डी.एम. इशा सिंगल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मूर्ती। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता।

फरीदाबाद। जिला व सत्र न्यायाधीश दर्शन सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मिनाक्षी।

गोरखपुर। राकेश कुमार झा,आइ.ए.एस.,कमिश्नर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मनोज। साथ हैं ब्र.कु. समृद्धि।

ग्वालियर-म.प्र.। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए.के. सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चेतना।

पटना-गायघाट। विधानसभा के प्रतिपक्ष नेता रामकुमार यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रानी।

वाराणसी रक्षासूत्र बांधने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.सरोज एवं ब्र.कु. चंदा, आइ.पी.एस.राजेश मोदक, सुबेदार मेजर पुष्पेन्द्र राय,कमान्डर जीलाजीत प्रसाद, पी.सी. बबन प्रसाद तथा ब्र.कु.ओमकारनाथ।